इमाम महदी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर।

इमाम महदी की आमद अलामाते क़यामत में से एक है। अल्लाह के रसूल सल्ल. के कहे मुताबिक क़यामत से पहले जो बड़ी निशानियां ज़ाहिर होंगी उन्हीं में से एक इमाम महदी का ज़ाहिर होना भी है। आप सल्ल. ने कई दफा अलग–अलग अन्दाज़ व तरीकों से इस बारे में उम्मत को ख़बर दी है।

इमाम महदी अपने वक़्त में उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह करेगें। तजदीद अहयाये दीन करेगें। जुल्म व ना इन्साफी से सिसकती दुनिया को अदल व इन्साफ से भर देगे। जुल्म का ख़ात्मा करेगें और दीन को क़ायम करेगें। आप ही के ज़माने में दज्जाल निकलेगा और आसमान से ईसा अलेहि. का नुजूल होगा।

इमाम महदी के बारे में अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा है कि वह आखिरी ज़माने में पैदा होगें। यह नहीं कि वह पैदा हो चुके हैं, मोजूद हैं और कहीं किसी ग़ार में है या ग़ायब हैं। और यह कि वह खुद महदी होने का दावा नहीं करेगें बल्कि अल्लाह की मदद से दावत व जिहाद का फ़रीज़ा ऐसी हिक्मत से अन्जाम देगें कि उन्हें कामयाबी नसीब होगी। मुसलमानों को इमाम महदी ही की ज़िन्दगी में इल्म व यकीन हो जाएगा कि यह महदी है।

नाम–नसब – अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''अगर दुनिया का एक दिन भी बाक़ी होगा तो अल्लाह उस दिन को इतना बड़ा कर देगा कि उसमें एक ऐसे शख्स को भेजेगा जो मुझसे होगा यानि मेरे एहले बैअत से होगा। उस का नाम मेरे नाम (मुहम्मद) और उसके वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम (अब्दुल्लाह) के नाम के मुताबिक होगा।'' (अबु दाऊद 4282, तिर्मिजी 2230 सही)

महदी की सिफ़ात – ''वह चौड़ी पैशानी और लम्बी नाक वाला होगा। वह ज़मीन को अदल व इन्साफ से उसी तरह भर देगा जैसे वह पहले जुल्म से भरी हुई थी। उस की हुकुमत सात साल तक रहेगी।'' (अबु दाऊद 4285–हसन)

महदी के हसन रजि. की नस्ल से होने में हिक्मत –

इब्ने कय्यिम रह. कहते हैं ''हसन रजि. ने अपने वालिद हज़रत अली रजि. की शहादत के बाद हुकूमत संभाली थी। मगर उस वक़्त के मुसलमानों के हालात को भांप कर 6 माह की हुकूमत

के बाद सिर्फ अल्लाह की रज़ा लिए हुकूमत छोड़ दी और हज़रत मुआविया रजि. के हवाले कर दी ताकि मुसलमानों में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ पैदा हो जाए। हुकूमत की बागडोर सिर्फ एक शख्स के हाथ में हो और मुसलमानों में आपस में खूं रेज़ी न हो। अल्लाह ने उनके इस अमल में बरकत डाली और उन्हें उसका अच्छा बदला दिया। जो कोई भी अल्लाह की ख़ातिर किसी चीज़ को छोड़ देता है तो अल्लाह उसे या उसकी औलाद को उससे बेहतर चीज़ अता कर देता है।'' (अल मनार, अल मुनीफ़ सफ़ा 151)

महंदी के ज़ाहिर होने का वक़्त

सोबान रजि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''तुम्हारे (कअबे के) खज़ाने के पास तीन लोग आपस में जंग करेगें। उनमें से हर एक किसी ख़लीफा का बेटा होगा। मगर यह खज़ाना किसी को भी नहीं मिलेगा। फिर मशरिक़ से काले झण्डे निकलेगें। वो तुम्हें इस तरह क़त्ल करेगें कि पहले जिसकी मिसाल न होगी। फिर जब तुम उस (महदी) को देखों तो उसकी बैअत कर लो। ख़्वाह तुम्हे बर्फ़ पर घुटनों के बल घिसट कर जाना पड़े।'' (इब्ने माजा 4084 –सही)

एक सवाल – एक रिवायत में महदी का मक्का में ज़ाहिर होना बयान हुआ है और दूसरी में कहा गया कि काले झण्डे मशरिक़ (खुरासान) की तरफ से आएगें तो सही क्या है ?

जवाब – इब्ने कसीर रह. कहते हैं कि महदी की ताईद के लिए मशरिक़ से कुछ लोग आएगें जो उसकी मदद करेगें उसके हाथ मजबूत करेगें और उसकी हुकूमत क़ायम करेगें। उनके झण्डो का रंग काला होगा। (अल निहाया फ़ी अल फ़ितन सफा–27)

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''मेरी उम्मत के आख़िरी ज़माने में महदी का ज़हूर होगा। अल्लाह उसके दौर में खूब बारिशें बरसाएगा। ज़मीन में खूब पैदावार होगी। वह लोगों में बराबरी की बुनियाद पर माल बांटेगा। माल व दौलत की बहुतायत होगी और उम्मते मुस्लिमा अज़ीम उम्मत बन जाएगी। वह सात या आठ साल हुकूमत करेगा।'' (हाकिम जिल्द 4 सफा 558 –सही) ''फिर उसके चले जाने के बाद ज़िन्दगी में कोई ख़ैर व भलाई नहीं रहेगी।''(मुसनद अहमद –ज़ईफ)

महदी के बारे में अहादीस –

इस बारे में अहादीसे रसूल सल्ल. दो तरह की हैं।

1. जिन में महदी का ज़िक्र साफ़–साफ़ मौजूद है।
2. जिनमें महदी की सिर्फ सिफ़ात बयान हुई है।

यूं तो महदी के बारे में लगभग 50 अहादीस मरवी हैं। उनमें कुछ सही, कुछ हसन व कुछ ज़ईफ हैं। इस बारे में आसारे सहाबा रजि. की तादाद 28 है। उनमें से कुछ अहादीस यह हैं –

1. अली रजि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''महदी हम में से होगा। अल्लाह तआला एक ही रात में उसकी

इस्लाह कर देगा।'' (मुसनद अहमद 645, इब्ने माजा 4085– सही) इस हदीस की तशरीह करते हुए मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी रह. ने कहा कि ''अल्लाह एक ही रात में उनके सारे मामलात सुधार देगा और उनकी शान इतनी बढ़ा देगा कि लोग एक ही रात में उनकी ख़िलाफत पर एक राय हो जाएगें।'' (मिरक़ात अल मफ़ातीह–जिल्द 5 सफ़ा 180)

2. ''महदी मेरी ओलाद से होगा। वह फ़ातिमा रजि. की नस्ल से होगा।'' (अबु दाऊद– 4284–सही)

3. ''मैं तुम्हें महदी की आमद की खुश ख़बरी देता हूँ। उसका ज़हूर उस वक्त होगा जब लोगों में इख्तेलाफ़ बहुत ज़्यादा हो जाएगा और ज़लज़ले कसरत से आएगें। वह ज़मीन को उसी तरह अदल व इन्साफ से भर देगा जिस तरह वह पहले जुल्म से भरी हुई थी। आसमानों व जमीन के रहने वाले सब उससे खुश होगें। वह लोगों में बराबरी से माल तक़्सीम करेगा। लोगों में माल की बहुतायत होगी। यहां तक कि कोई माल व दौलत का हाजतमंद न रहेगा। यह सूरते हाल 7–8 या 9 साल तक जारी रहेगी।'' (अहमद–11504–सही)

4. ''ईसा अलैहि. जब नाज़िल होगें तो मुसलमानों के अमीर (महदी) उनसे कहेगें कि आप नमाज़ की इमामत कीजिए। वह कहेगें कि नहीं। इस उम्मत की इमामत इस उम्मत के लोगों का ही हक़ है। यह इस उम्मत पर अल्लाह का एहसान और फ़ज़ल हैं।'' (अहमद 14777 इब्ने हिब्बान– 6819)

इस हदीस के मअनी यह हैं कि दज्जाल इमाम महदी के ज़माने में ज़ाहिर होगा। फिर जब ईसा अलैहि.उसे क़त्ल करने के लिए नाज़िल होगें तो उस वक्त महदी ही मुसलमानों के क़ाइद होगें। ईसा अलैहि. भी तमाम मोमिनों के साथ महदी की इमामत में नमाज़ अदा करेगें। ईसा अलैहि. के इमाम महदी के पीछे नमाज़ पढ़ने का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि महदी ईसा अलैहि. से अफ़ज़ल हैं। खुद आप सल्ल. ने भी अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रजि. के पीछे एक दफ़ा नमाज़ पढ़ी है। बल्कि इसलिए कि सब लोगों को यह मालूम हो जाए कि वह (ईसा) मुहम्मद सल्ल. के ताबेअदार बन कर तशरीफ़ लाए हैं और उन्हीं की शरीअत के मुताबिक़ फैसले करेगें। बाद में खुद इमाम महदी ईसा अलैहि. की पैरवी करेगें और उनके लश्कर के एक सिपाही की हैसियत से ख़िदमात देगें।

5. ''दुनिया उस वक़्त तक ख़त्म नहीं होगी जब तक मेरे अहले बैत में से एक शख्स अरबों का हाकिम न बन जाए। उसका नाम मेरे नाम जैसा होगा।'' (अबु दाऊद–4282–सही)

6. ''एक ख़लीफ़ा की मौत के वक्त उम्मत में इख़्तेलाफ पैदा होगा। उस वक्त एक शख़्स मदीना से भाग कर मक्का पहुंचेगा। मक्का के कुछ लोग उसके पास आएगें और उसे अपना अमीर बनाना चाहेगें। वह उसे नापसंद करेगा। मगर लोग हज्रे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम

के बीच उसकी बैअत करेगें। उससे लड़ने के लिए शाम से एक फ़ौज आएगी। जब वह मक्का व मदीना के बीच पहुंचेगी तो उसे ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। अपने लश्कर का यह हाल जानकर शाम और इराक़ के चुनिन्दा इज़्ज़तदार व दीनदार लोग मक्का आऐगें और महदी की बैअत कर लेगें। फिर कुरैश में से एक शख़्स जो बनु कल्ब का भांजा होगा। महदी के ख़िलाफ़ उठेगा। वह महदी के साथियों के ख़िलाफ़ एक फ़ौज भेजेगा। मगर महदी के साथी उसे शिकस्त देगें। महदी माले ग़नीमत तक़्सीम करेगें और लोगों के साथ नबी सल्ल. की सुन्नत के मुताबिक़ मामला करेगें। महदी की हुकूमत सात साल रहेगी। फिर वह वफ़ात पा जाएगा और मुसलमान उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा करेगें। (अबु दाऊद–4286–सही)

महदी होने के दावेदार –

जब हम तारीख़ पर नज़र डालते हैं तो पाते हैं कि बहुत से लोगों ने महदी होने का दावा किया है और कई लोगों ने उनके दावो को सच्चा भी माना तो कुछ को लोगों ने ही महदी का लक़ब दे दिया। उनमें से कुछ यह है –

1. हारिस बिन शरीह – उमवी ख़लीफ़ा हिशाम बिन अब्दुल मलिक के दौर में 116 हिजरी में महदी होने का दावा किया। 128 हिजरी में यज़ीद बिन वलीद के दौर में फ़ौत हुआ। (तारीख इब्ने खलदून, इब्ने असीर)

2. उबैदुल्लाह बिन मैमून – 259 हिजरी में पैदा हुआ और 322 हिजरी में वफ़ात पाई। यह पहली फ़ातमी (शियाई) हुकूमत का बानी था। (तारीख़ इब्ने ख़लकान, तारीख अल खुलफ़ा)

3. मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बरबरी – यह इब्नेतोमरत के नाम से जाना जाता है। 514 हिजरी में ज़ाहिर हुआ।

4. अहमद बिन इब्राहिम – यह शख़्स इमाम इब्ने तीमिया रह. के ज़माने में गुज़रा है।

5. अब्बास मग़रबी – इब्ने खलदून के मुताबिक इसने अफ्रीका के एक गांव गुमारा में महदी होने का दावा किया।

6. सूफ़ी तोयज़री – इब्ने खलदून ने लिखा कि आठवी सदी हिजरी के शुरु में अफ्रीका में ही इसने भी अपने महदी होने का दावा किया।

7. सय्यद मुहम्मद जौनपुरी – 901 हिजरी में हज से फ़ारिग़ होकर मक्का ही में अपने महदी होने का दावा किया। फिर हिन्दुस्तान लौट कर जगह–जगह अपने महदी होने का ऐलान करते फिरे। जब यहां दाल न गली तो खुरासान चले गए और 910 हिजरी में वहीं फ़ौत हुए।

8. मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सूडानी – यह एक सूफ़ी था। 38 साल की उम्र में महदी होने का दावा किया। 1302 हिजरी में फौत हुआ।

9. मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह क़हतानी – यह रियाज़ (सऊदी अरब) में ज़ाहिर हुआ। कुछ लोगों ने इसकी पैरवी भी की। 1400 हिजरी (20

नवम्बर 1979 ईसवी) को मस्जिदे हराम में अपने महदी होने का ऐलान किया।

10. मुहम्मद बिन हसन असकरी – यह शियाओं के बारहवे इमाम हैं। जिनके बारे में वह कहते हैं कि यह हसन बिन अली रजि. की औलाद से नहीं बल्कि हुसैन बिन अली रजि. से हें। शियाओं का अक़ीदा है कि यह 260 हिजरी में सामरा के एक ग़ार में दाख़िल हुए। पांच साल की उम्र में। वह ज़िन्दा है और आखिरी ज़माने में वहीं से बाहर निकलेगें। शियाओं के ख़्याल में यह इमाम हर जगह हाज़िर व नाज़िर हैं। लोगों के हालात से आगाह है मगर लोगों को दिखाई नहीं देता।

11. अली बिन अबि तालिब रजि. –अब्दुल्लाह बिन सबा ने यह अक़ीदा गढ़ा और फैलाया कि अली रजि. ही महदी हैं और क़यामत से पहले दुनिया में वापिस आएगें।

12. मुहम्मद बिन हनफ़िया रह. – मुख्तार सक़फ़ी ने यह अक़ीदा फैलाया कि मुहम्मद बिन हनफ़िया (रह.) महदी हैं।

असल महदी की पहचान –

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने इमाम महदी के मामले को हवा में नहीं छोड़ा बल्कि उनकी पहचान के लिए बहुत साफ़ निशानियां छोड़ी हैं। जिनकी रोशनी में हम उन्हें आसानी से पहचान सकते हैं – जैसे

1. महदी लोगों को अपनी तरफ दावत नहीं देगा और न ही अपनी बैअत करने के लिए लोगों से कहेगा बल्कि लोग खुद उसकी बैअत करेगें और वह इसे नापसन्द करेगा।
2. महदी का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा।
3. वह हसन बिन अली रजि. की औलाद में से होगा।
4. वह चौड़ी पैशानी व ऊंची नाक वाला होगा।
5. वह कुछ इस तरह के हालात में जाहिर होगा –

(अ) एक ख़लीफ़ा के फ़ौत होने पर उम्मत में इख्तेलाफ़ होगा।
(ब) ज़मीन जुल्म व ज़्यादती से भरी होगी।
(स) तीन खुलफ़ा के बेटे आपस में जंग करेगें।
(द) वह एक नेक व मुत्तकी शख़्स होगा। इल्में शरीअत और हिक्मत व दानिश से लबरेज़ होगा।
(य) मक्का में ज़ाहिर होगा और मक़ामे इब्राहिम व हज्रे अस्वद के बीच उसकी बैअत की जाएगी।

अब सवाल यह उठता है – कि फिर क्यों किसी ने अपने आपको या किसी दूसरे को इमाम महदी समझा ?

जवाब यह है कि

1. कुछ लोग तो ऐसे थे जिन्होंने हुकूमत हासिल करने के लिए यह दावा किया। जैसे इब्ने तोमरत और उबैदुल्लाह बिन मैमून अल क़दाह।

2. कुछ ऐसे हैं जिन्हें लोगों ने इमाम महदी मान लिया। जैसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह नफ़्स ज़किया।
3.कुछ ने अपनी शोहरत हो जाने पर ख़्वाबों के सहारे खुद को महदी समझ लिया जैसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह क़हतानी।
अहले सुन्नतवल जमाअत के नज़दीक महदी की हक़ीक़त सिर्फ इतनी है कि वह मुस्लिम अइम्मा में से एक इमाम होगा। जो इन्साफ के लिए काम करेगा और ग़ैर मासूम होगा।
कुछ अहले इल्म ने महदी का इन्कार किया है जैसे
1. इब्ने ख़लदून – यह महदी के बारे में शक में रहे।
2. मुहम्मद रशीद रज़ा – इन्होंने महदी की अहादीस को जईफ़ समझा।
3. अहमद अमीन – इन्होंने महदी की रिवायात को खुराफ़ात का नाम दिया।
4. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद – यह महदी से मुताल्लिक़ अहादीस गढ़ी हुई मानते हैं।
5. मुहम्मद फ़रीद वजदी – यह भी महदी की सभी रिवायात को मौजूअ (गढ़ी हुई) बतलाते हैं।
महदी का इन्कार करने वालों के दलाइल–
1. कुरआन में महदी का ज़िक्र नहीं। अगर यह हक़ बात होती तो अल्लाह क़ुरआन में इसका ज़िक्र कर देता।
जवाब – कुरआन में सारी अलामाते क़यामत का ज़िक्र नहीं है। न दज्जाल के खुरुज का ज़िक्र है और न आख़िरी ज़माने में ज़मीन में धंसने के वाक़िए का। यह भी सुन्नत ही से साबित है। इसलिए कि "नबी सल्ल. अपनी ख़्वाहिश से बात नहीं करते।" (सुरह नज्म–आयत–3) और आप सल्ल. का इरशाद है "मुझे कुरआन अता किया गया है और उस जैसी एक और चीज़ भी।" (अहमद)
2. महदी की अहादीस बुख़ारी व मुस्लिम में नहीं है।
जवाब – इन दोनों मुहद्दिसीन ने सारी सही अहादीस को जमा नहीं किया। दुसरे मुहद्दिसीन ने भी सही रिवायतों को जमा किया था। बुख़ारी व मुस्लिम में महदी के बारे में रिवायत है मगर उनका नाम लिये बग़ैर।
महदी पर ईमान लाने का मतलब हरगिज़ यह नहीं है कि जुल्म व ज़्यादती के ख़िलाफ़ हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाया जाए और नेकी का हुक्म देने व बुराई से रोकने के फ़रीज़े को छोड़ दिया जाए।
अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अपने दीन की सही समझ दे व सीधी राह पर चलाए और हमारी ख़ताओं को माफ़ फ़रमाए। आमीन

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639,09887239649
दिनांक 06.04.14